हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया
मंगलवार, 25 मार्च 2014, देहरादून, पांच प्रदेश, 18 संस्करण, नगर संस्करण
www.livehindustan.com
वर्ष 5, अंक 70, 16 पेज, मूल्य ₹ 3.00

पवार की मुश्किल

एनसीपी प्रमुख शरद पवार के फर्जी मतदान की अपील के संबंध में चुनाव अधिकारियों ने भाषण का ब्योरा तलब कर लिया है।

संगोष्ठी के समापन पर प्रगतिशील किसान को सम्मानित करते पूर्व मुख्य सचिव आरएस टोलिया • हिन्दुस्तान

राज्य बनाएं अपनी कृषि और जल नीति : टोलिया

संगोष्ठी

देहरादून | वरिष्ठ संवाददाता

जल और मृदा संरक्षण पर आयोजित संगोष्ठी के समापन पर किसानों तथा वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए पूर्व मुख्य सचिव आरएस टोलिया ने कहा कि मृदा और पानी राज्यों का विषय है। केंद्र राज्यों को अपनी जल और कृषि नीति बनाने को कहे। उन्होंने कहा कि संसाधनों की कमी नहीं हैं, कमी प्रबंधन की है। किसान को केंद्र में रखकर प्रबंधन होगा तो पलायन भी रुकेगा और खेत किसान भी बचेंगे। उन्होंने कहा कि एक ओर केंद्र सरकार खेती किसानी और जलागम प्रबंधन पर विशेष ध्यान देने की बात करता है लेकिन 12वीं पंचवर्षीय योजना के 3 साल बीत जाने तक अभी यही तय नहीं है कि यह योजना किस विभाग के आधीन रहेगी।

हेस्को के अध्यक्ष डॉ. अनिल जोशी ने कहा कि मिट्टी गायब हो रही है और उसकी जगह रासायनिक उर्वरक ले रहे हैं। उन्होंने मिट्टी को भावी पीढ़ी की असली संपदा बताते हुए भूमि क्षरण रोकने के प्रयास करने की बात कही। भरसार विवि के वीसी डॉ. मैथ्यू प्रसाद ने रासायनिक उर्वरकों के सीमित प्रयोग की सलाह दी। वैज्ञानिक जीपी जुयाल, निदेशक डा. पीके मिश्रा, सहायक महानिदेशक आईसीएआर डॉ. एसके चौधरी, संगीता शर्मा और डॉ. डी मंडल मौजूद थे। इस दौरान कमुमुद्दीन, प्रेम चंद्र शर्मा, तारा दत्त, हरीश पांडे, गबिन सिंह, सुरेन्द्र दत्त बलूनी, उम्मेद सिंह (उत्तराखंड), परमजीत सिंह, मेहरबान सिंह, राजेन्द्र सिंह, गौतम ऋषि, अर्जब सिंह, सुखपाल सिंह (पंजाब), हरविंदर सिंह, प्रेमचंद, त्रिलोचन सिंह, सत्तार सिंह, महावीर सिंह, दीनबंधु शर्मा, कमल सिंह, गुरमेल सिंह, अभय सिंह, विकास चौधरी (हरियाणा), बाबूराम, रणजीत सिंह, पंकज (हिप्र), नियाज अहमद सब्बेर अहमद, महेन्द्र पाल, संजय सिंह, मोहम्मद यूसुफ(जम्मू कश्मीर) को सम्मानित किया गया।

P-16

श्रीलंका ने हॉलैंड को 39 रन के स्कोर पर समेटा

www.samaylive.com

राष्ट्रीय सहारा

सच पहचानें यही हिम्मत

राष्ट्रीयता • कर्त्तव्य • समर्पण

• देहरादून • नई दिल्ली • लखनऊ • गोरखपुर • पटना • कानपुर • वाराणसी से प्रकाशित

देहरादून। मंगलवार • 25 मार्च • 2014

नगर संस्करण, पृष्ठ18, वर्ष-7, अंक-2323 मूल्य ₹ 2.50

P-18

रणवीर व मेरे बीच कुछ नहीं : मुग्धा

वैज्ञानिकों, किसानों ने ली मिट्टी को बचाने की शपथ

देहरादून (एसएनबी)। भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संघ तथा केंद्रीय मृदा एवं जल संरक्षण अनुसंधान संस्थान के तत्वावधान में आयोजित कृषक संगोष्ठी का रविवार को समापन हो गया। तीन दिवसीय संगोष्ठी में शिरकत कर रहे पांच उत्तरी राज्यों उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, पंजाब व जम्मू-कश्मीर के कृषि वैज्ञानिकों व किसानों ने 'मृदा संरक्षण' की शपथ ली। सहारनपुर रोड स्थित इस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियर्स के सभागार में आयोजित समापन समारोह में प्रदेश के पूर्व मुख्य सूचना आयुक्त डा. आरएस टोलिया ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। इस अवसर पर उन्होंने देश की आर्थिकी को मजबूत बनाने के लिए मृदा संरक्षण पर जोर दिया।

कृषक संगोष्ठी में शिरकत करते पूर्व मुख्य सूचना आयुक्त डा. आरएस टोलिया और अन्य अतिथि।

उन्होंने कहा कि भारत कृषि प्रधान देश है। फसलों का उत्पादन तभी होगा जब उपजाऊ मिट्टी बची रहेगी। प्राकृतिक व कृत्रिम कारणों से बढ़ते मृदा क्षरण पर उन्होंने चिंता जताई। उन्होंने आह्वान किया कि कृषि वैज्ञानिक देश-प्रदेश के किसानों को मृदा संरक्षण की वैज्ञानिक विधि की जानकारी मुहैया कराने में मदद करे। उन्होंने मृदा एवं जल संरक्षण अनुसंधान संस्थान के कार्यों की सराहना भी की। उत्तराखंड औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय भरसार के कुलपति प्रोफेसर मैथ्यू प्रसाद ने भी प्रतिभागी कृषि वैज्ञानिकों व किसानों को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि औद्यानिकी व वानिकी विवि भी कृषि कार्यों से जुड़ा है। 'हेस्को' के संस्थापक पद्मश्री अनिल जोशी ने कहा कि ग्रामीण किसानों को विज्ञान व तकनीकी का लाभ मिलना चाहिए।

- कृषक संगोष्ठी का समापन, 42 प्रगतिशील किसानों का सम्मान
- पूर्व मुख्य सूचना आयुक्त डा. आरएस टोलिया ने दिया मृदा संरक्षण पर जोर

स्थानीय संसाधन तभी बचेंगे जबकि विज्ञान का विस्तार ग्रामीण क्षेत्रों तक होगा। पर्वतीय क्षेत्रों में प्राकृतिक आपदा, भारी बारिश व नदी-नालों से होने वाले मृदा क्षरण पर भी उन्होंने प्रकाश डाला। इस अवसर पर मृदा बचाओ शपथपत्र व सीएसडब्ल्यूसीआरटीआई पब्लिकेशन भी रिलीज किया गया। कृषि तकनीकी के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले 42 प्रगतिशील किसानों को सम्मानित किया गया। डा. डी मंडल ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस मौके पर आयोजन समिति के चेयरमैन डा. पीके मिश्रा, आयोजन सचिव डा. एम मुरूगानंदम व डा. एसके चौधरी उपस्थित रहे।

दून दर्पण

♦वर्ष 54 ♦अंक 342 मंगलवार 25 मार्च 2014 ♦मूल्य 2.00 ♦पृष्ठ 08

कार्यशाला में किसानों को योजनाओं का लाभ देने पर जोर

देहरादून, २४ मार्च (संवाददाता)। भारतीय मृदा एवं जल संरक्षक संघ एवं केन्द्रीय मृदा एवं जल संरक्षण अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान, देहरादून के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित मृदा एवं जल संसाधन संरक्षण हेतु कृषक प्रथम संगोष्ठी का समापन हुआ।

समापन समारोह के मुख्य अतिथि डा. आर० एस० टोलिया, पूर्व मुख्य सचिव उत्तराखंण्ड सरकार एवं मुख्य सूचना आयुक्त उत्तराखंड थे। उन्होने सह-भागियों को संबोधित किया, प्रगतिशील किसानों को पुरस्कार वितरित किए तथा विभिन्न सरकारी संस्थाओं से विभिन्न योजनाओं के माध्यम से किसानों को लाभ पहुंचाने वाली योजनाओं के एक संगठित एवं सक्रिय रूप से कार्यान्वयन की आवश्यकता पर बल दिया।

इस अवसर पर डा० मैथ्यू प्रसाद, उप-कुलपति, उत्तराखंड बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, डा० एस०,के० चौधरी, सहायक महानिदेशक, भ कृअनुप, नई दिल्ली तथा डा० अनिल प्रकाश जोशी, अध्यक्ष, हेस्को, देहरादून संगोष्ठी के विशिष्ट अतिथि थे, जिन्होने सहभागियों को संबोधित किया।

डा० मैथ्यू प्रसाद, उप-कुलपति तथा डा० एस०के० चौधरी, सहा० महानिदेशक ने मृदा जैविक कार्बन की हानि तथा मृदा स्वास्थ्य जो जीवन के आवश्यक तत्व हैं की गिरावट पर चिंता व्यक्त करने के लिए इसको नियंत्रण करने पर जोर किया, इससे पूर्व डा. पी० के० मिश्रा, निदेशक, के० मृ० ज० सं० अनु० प्र सं०, देहरादून एवं अध्यक्ष भामृजसं संघ, देहरादून ने मुख्य अतिथि, प्रगतिशील किसानों एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए संगोष्ठी में चर्चा किए गए विषयों के बारे में बताया।

संगो ठी उत्तर भारत के पांच राज्यों ;हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश एवं जम्मू और काश्मीर द्ध के साथ-साथ एन०सी०आर० दिल्ली एवं केन्द्र शासित, चंडीगढ से आए किसानों के मुद्दों एवं अनुभवों पर केन्द्रित थी। चुने हुए प्रगतिशील किसानों ने अपने विचारों एवं अनुभवों को वैज्ञानिकों एवं कार्यकर्त्ताओं के साथ सांझा किया। संगोष्ठी के माध्यम में किसान अनुसंधानकर्त्ता, नीतिनिर्धारक, नियोजक, प्रशासक, गैर सरकारी संगठरन एवं कार्यकर्त्ता एक मंच पर एकत्रित हो सके। जहां बैठकर उन्होने मृदा एवं जल संरक्षण से जुडी प्रौद्यौगिकियों के उन्नतिकरण, अन्य मुद्दों व अनुभवों पर चर्चा की। लगभग १८० पंजीकृत सहभागियों ने संगोष्ठी में भाग लिया और बहुउद्देशीय प्रयोगों को आज की आवश्यकताओं के रूप में चिन्हित किया गया।

The Premier English Daily
Garhwal Post
For Tomorrow's People!
www.garhwalpost.in | Vol. VIII No. 263 DEHRADUN | Tuesday, 25 March, 2014 | Pages 16 | Price ₹ 1

Conference on conserving soil & water resources concludes at CSWCRTI

By OUR STAFF REPORTER

DEHRADUN, 24 Mar: The Indian Association of Soil and Water Conservationists (IASWC) and Central Soil and Water Conservation (CSWCRTI, ICAR), Dehradun jointly organised the conference – 'Farmers First for Conserving Soil & Water Resources in Northern Region' (FFCSWR-2014) during 22-24 March.

The Chief Guest at the valedictory function today was Dr RS Tolia, former Chief Secretary and Chief Information Commissioner. He pleaded for unified efforts of various governmental agencies and functionaries to maximise delivery from different schemes meant for the benefit of farmers. Dr Matthew Prasad, Vice Chancellor, Uttarakhand University of Horticulture and Forestry (UUHF), Dr SK Chaudhary, Assistant Director General (ADG, SW&M, ICAR), New Delhi and Dr Anil Prakash Joshi, Chairman, HESCO, Dehradun were Guests of Honour and addressed the participants during the concluding session to consolidate the outcome of the conference.

Dr Matthew Prasad and Dr Anil Joshi warned that the soil was source and end as well and hence it needed to be protected in order to sustain life on Earth.

The dignitaries and participants pledged to ensure soil conservation. Farmer friendly organisms and features of the soil needed to be conserved by one and all. Dr SK Chaudhary, ADG, emphasised the need for soil conservation to minimise the loss of soil organic carbon and soil health, which are important for life. He also informed the gathering that balanced use of fertilisers and contingency planning to tackle emergencies was needed. MJ Sharma, Director, Department of Soil Conservation, J&K, Dr JC Bhatt, Director, VPKAS, Almora, Dr Madhumitha Mukherjee, Executive Director, NFDB, Hyderabad and Dr VC Goyal, Head, NIH, Roorkee addressed the participants on soil water conservation, watershed management and livelihood options including fish production in available water resources.

Earlier, Dr PK Mishra, Director, CSWCRTI and the President, IASWC, Dehradun welcomed the Chief Guest, innovative farmers and the participants. He called for inputs from the participants to refine the outcomes further.

The Conference focussed the issues and experiences of farmers from 5 States of Northern India (Haryana, Punjab, Himachal Pradesh, Uttarakhand and Jammu and Kashmir) besides NCR of Delhi and UT of Chandigarh. Chosen innovative farmers shared their ideas and experiences with scientists and other stakeholders. The Conference brought together farmers, researchers, policy makers, planners, administrators, NGOs and stakeholders on a common platform to share and discuss technological advancements, experiences and other issues related to adoption of Soil and Water Conservation practices.

In all, about 180 registered delegates including 60 farmers and many invited resource persons, experts, research managers and policy planners participated in the three days deliberations during 22-24 March.

Various recommendations on researchable issues, policy needs and extension efforts emerged from the discussion, which will be further refined by the organisers for the end users. Policies should be different for hills and plains as per the specificity of resources, topography, farmers' capacity, it was affirmed. Networking of farmers and creation of farmer associations, Field Farm Schools in modern villages, adoption of modern tools and techniques, refinement of indigenous knowledge, multiple use of water, integration of farming components, etc., were identified as requirements.

About 44 chosen progressive farmers from the region out of 155 nominations were felicitated and delivered their views and experiences on soil and water conservation in 5 technical sessions addressing 5 major states of the region.

om Dehradun & Shimla 67th Year of publication Founded by S.P Pandhi
VOL. LXVI No. 02 RNI No. 15357/67 DEHRADUN ● TUESDAY ● MARCH 25, 2014

The Himachal Times

Pages 8 - ₹. 1.00

should be treated as Actress Raima Sen | RUPEE - DOLLAR $1- 60.77- | SENSEX 22055+ | NIFTY 6584+ | Gold 24-Carat (10 GRMS) 29,274 | Silver (1 KGS) 44,040

FFCSWR CONCLUDES

Unified efforts by Govt agencies for benefit of farmers needed: RS Tolia

By Staff Reporter
DEHRADUN, MARCH 24

The Indian Association of Soil and Water Conservationists (IASWC) and Central Soil and Water Conservation (CSWCRTI), Dehradun jointly organized the conference, Farmers First for Conserving Soil and Water Resources in Northern Region (FFCSWR-2014) during Mar 22 to 24.

The Chief Guest at the valedictory function of the conference was Dr R S Tolia, former Chief Secretary, Govt of Uttarakhand and Chief Information Commissioner. Addressing the participants, he pleaded for the unified efforts of various governmental agencies and functionaries to maximize delivery from different schemes meant for the benefit of farmers.

Farmers should be kept in the centre of development because it was they who had brought about green revolution and milk revolution. Soil and water have great importance and its good management must be done. Dr Matthew Prasad, Vice Chancellor, Uttarakhand University of Horticulture and Forestry (UUHF); Dr SK Chaudhary, Assistant Director General (ADG, SW&M, ICAR), New Delhi; and Dr Anil Prakash Joshi, Chairman, HESCO, Dehardun were Guests of Honor and addressed the participants during the concluding session.

Dr Matthew Prasad and Dr Anil Joshi warned that the soil is source and end as well, and hence it needs to be protected in order to sustain life on the earth. Dr Matthew Prasad said that study of soil erosion must be done to know about its binding properties. A balance between the use of chemical fertilizers and organic farming must be made. Dr Anil Joshi said that mankind has not given respect to soil and water and exploited them to the maximum for selfish gains. "A big mission about conservation of soil and water must be started." Dr SK Chaudhary, ADG, emphasized on the need of soil conservation to minimize the loss of soil organic carbon and soil health, which are important for life. He also informed that balanced use of fertilizers, and contingency planning to tackle emergencies is needed. MJ Sharma, Director, Department of Soil Conservation, J&K; Dr JC Bhatt, Director, VPKAS, Almora; Dr Madhumitha Mukherjee, Executive Director, NFDB, Hyderabad; and Dr V C Goyal, Head, NIH, Roorkee addressed the participants on soil and water conservation, watershed management and livelihood options including fish production in available water resources.

Earlier, Dr PK Mishra, Director, CSWCRTI and the President, IASWC, Dehradun welcomed the guests, innovative farmers and the participants. He called for inputs from the participants to refine the outcomes further. The participants pledged to work on soil conservation. Innovative farmers shared their ideas and experiences with scientists and other stakeholders. The conference brought together farmers, researchers, policy makers, planners, administrators, NGOs and stakeholders on a common platform to share and discuss technological advancements, experiences and other issues related to adoption of soil and water conservation practices.

In all, about 180 delegates, including 60 farmers and many invited resource persons, experts, research managers and policy planners participated in the three days deliberations during March 22-24.

Various recommendations on researchable issues, policy needs and extension efforts emerged from the discussion, which will be further refined by the organizers for the end users. Policies should be different for hills and plains as per the specificity of resources, topography, farmers' capacity. Networking of farmers and creation of farmer associations, Field Farm Schools in modern villages, adoption of modern tools and techniques, refinement of indigenous knowledge, multiple use of water, integration of farming components etc. were identified as requirements.

About 44 chosen progressive farmers from the region out of 155 nominations were felicitated and expressed their views and experiences on soil and water conservation in five technical sessions addressing five major states of the region.

The conference was sponsored by the National Rainfed Area Authority (NRAA), New Delhi, Indian Council of Agricultural Research (ICAR), National Fisheries Development Board (NFDB) Hyderabad, National Biodiversity Authority (NBA) Chennai, NABARD Mumbai, Science and Engineering Research Board (SERB) of DST, New Delhi, and Department of Land Resources (DoLR), Ministry of Rural development, New Delhi.

The conference was inaugurated on Mar 22 by the Chief Guest Dr J S Samra, Chief Executive Officer (CEO), NRAA, New Delhi. Various awards of the IASWC and recognition awards were bestowed to meritorious scientists and innovative farmers on different sessions of the conference.

At the end, farmers expressed their happiness that this was the first programme in which farmers were listened, recognized and awarded. The farmers asked Dr M Muruganandam, Organising Secretary of this conference to process the information emerged out of the conference further and communicate to them for continued cooperation and action.

The programme ended with vote of thanks and highlights of soil conservation by Dr D Mandal, Secretary of the IASWC, Dehradun.

The Tribune
VOICE OF THE PEOPLE
TUESDAY, MARCH 25, 2014 ■ UTTARAKHAND EDITION
CHANDIGARH | NEW DELHI | JALANDHAR | BATHINDA | SRINAGAR | WWW.TRIBUNEINDIA.COM | VOL. 134 NO. 82 | 20 PAGES | ₹3.00

'Soil needs protection to sustain life on earth'

TRIBUNE NEWS SERVICE

DEHRADUN, MARCH 24

The Indian Association of Soil and Water Conservationists (IASWC) and Central Soil and Water Conservation (CSWCRTI) , Dehradun, jointly organised a conference titled "Farmers First for Conserving Soil and Water Resources in Northern Region" (FFCSWR- 2014) from March 22 till 24 here.

The chief guest of the valedictory function of the conference, RS Tolia, former Chief Secretary and Chief Information Commissioner, addressing the participants pleaded for the unified efforts of various governmental agencies and functionaries to maximise delivery from different schemes meant for the benefit of farmers. Matthew Prasad, VC, state University of Horticulture and Forestry (UUHF), SK Chaudhary, Assistant Director General (ADG, SW&M, ICAR), New Delhi, and Anil Prakash Joshi, Chairman, Hesco, Dehardun, who were guests of honour also addressed the participants during the concluding session to consolidate the outcome of the conference.

Matthew Prasad, VC, UUHF, and Anil Joshi warned that the soil is source and hence it needs to be protected in order to sustain life on the earth. The dignitaries and participants pledged on soil conservation. Farmers' friendly organisms and features of the soil need to be conserved by one and all. SK Chaudhary, ADG, emphasised the need for soil conservation to minimise the loss of soil organic carbon and soil health, which are important for life. He also informed the gathering that balanced use of fertilisers and contingency planning to tackle emergencies was needed. MJ Sharma, Director, Department of Soil Conservation, J&K, JC Bhatt, Director, VPKAS, Almora, Madhumitha Mukherjee, Executive Director, NFDB, Hyderabad, and VC Goyal, head, NIH, Roorkee, addressed the participants on soil water conservation, watershed management and livelihood options, including fish production in available water resources.

Dignatraies at the concluding function of a three-day conference on soil conservation in Dehradun on Monday. A TRIBUNE PHOTOGRAPH

Earlier, PK Mishra, Director, CSWCRTI, and the president, IASWC, Dehradun, welcomed the chief guests, innovative farmers and the participants. He called for inputs from the participants to refine the outcome further.

The conference focused on the issues and experiences of farmers from 5 states of Northern India (Haryana, Punjab, Himachal Pradesh, Uttarakhand and Jammu and Kashmir), besides NCR of Delhi and UT of Chandigarh. Chosen innovative farmers shared their ideas and experiences with scientists and other stakeholders. The conference brought together farmers, researchers, policy makers, planners, administrators, NGOs and stakeholders on a common platform to share and discuss technological advancements, experiences and other issues related to adoption of soil and water conservation practices. In all, about 180 registered delegates, including 60 farmers and many invited resource persons, experts, research managers and policy planners participated in the three-day deliberations .

Various recommendations on researchable issues, policy needs and extension efforts emerged from the discussion, which will be further refined by the organisers for the end users. Policies should be different for hills and plains as per the specificity of resources, topography, farmers' capacity. Networking of farmers and creation of farmer associations, field farm schools in modern villages, adoption of modern tools and techniques, refinement of indigenous knowledge, multiple use of water, integration of farming components etc. were identified as requirements.

वर्ष 17 अंक 323
पृष्ठ 20
देहरादून, मंगलवार
25 मार्च 2014
नगर संस्करण
मूल्य ` 3.00

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

दैनिक जागरण

परीक्षा की तरह हैं चुनाव 6 आतंकवाद की चुनौती से निपटने को साथ काम कर रहे भारत-चीन

www.jagran.com उत्तराखण्ड • दिल्ली • उत्तर प्रदेश • मध्य प्रदेश • हरियाणा • बिहार • झारखंड • पंजाब • जम्मू-कश्मीर • हिमाचल प्रदेश • पश्चिम बंगाल से प्रकाशित

मृदा जैविक कार्बन की हानि चिंताजनक

- किसानों को नवीन तकनीक मुहैया कराने के संकल्प के साथ संपन्न हुई 'कृषक प्रथम' संगोष्ठी
- मृदा जैविक कार्बन की हानि व मृदा स्वास्थ्य की गिरावट को नियंत्रित करने पर दिया बल

जागरण संवाददाता, देहरादून: भारतीय मृदा एवं जल संरक्षक संघ व केंद्रीय मृदा एवं जल संरक्षण अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान की तीन दिवसीय 'कृषक प्रथम' संगोष्ठी कृषकों को नवीन व सरल तकनीक मुहैया कराने के संकल्प के साथ संपन्न हो गई।

सोमवार को समापन समारोह का शुभारंभ पूर्व मुख्य सचिव डॉ. आरएस टोलिया ने किया। उन्होंने विभिन्न प्रगतिशील कृषकों को पुरस्कार भी बांटे। साथ ही उन्होंने कहा कि किसानों को लाभ पहुंचाने वाली योजनाओं को संगठित करने की जरूरत है। उत्तराखंड बागवानी व वानिकी विश्वविद्यालय के उप कुलपति डॉ. मैथ्यू प्रसाद ने मृदा जैविक कार्बन की हानि व मृदा स्वास्थ्य में आ रही गिरावट के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए इसे नियंत्रित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

इस दौरान शोध योग्य विषयों व नीतिगत आवश्यकताओं पर कई संस्तुतियां दी गई। साथ ही निर्णय लिया गया कि किसानों के नेटवर्क व किसान संघों की संस्तुतियों को अमल में लाने के लिए स्थानीय ज्ञान को उन्नत बनाया जाएगा। इस अवसर पर सहायक महानिदेशक डॉ. एसके चौधरी, हैस्को के संचालक पद्मश्री डॉ. अनिल जोशी, निदेशक डॉ. पीके मिश्रा, डॉ. एम मुरुगानंदम आदि उपस्थित थे।

अमर उजाला
हरियाणा | दिल्ली | चंडीगढ़ | पंजाब | उत्तर प्रदेश | उत्तराखंड | हिमाचल | जम्मू-कश्मीर
नगर संस्करण वर्ष 18 अंक 28 पृष्ठ : 16 मूल्य : तीन रुपये

7 राज्य
19 संस्करण

सरकार 2014
12 13 14

'पूरब के स्कॉटलैंड' में

पुराने ज्ञान को मान देंगे विद्वान

अमर उजाला ब्यूरो

देहरादून। केंद्रीय मृदा एवं जल संरक्षण, अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान की ओर से चल रही प्रथम कृषक संगोष्ठी का सोमवार को समापन हो गया। इंस्टीट्यूशन आफ इंजीनियर्स के सभागार में संगोष्ठी के अंतिम दिन विशेषज्ञों, किसानों के सुझावों पर संस्तुतियां तैयार की गईं। तय हुआ कि विद्वान पुराने ज्ञान को भी मान देंगे।

मिट्टी से जैविक कार्बन की हानि पर चिंता जताने के साथ ही विशेषज्ञों ने मिट्टी की सेहत सुधारने पर जोर दिया। इससे पूर्व मुख्य अतिथि प्रदेश के पूर्व मुख्य सचिव डा. आरएस टोलिया ने किसानों को लाभ पहुंचाने वाली योजनाओं को संगठित और सक्रिय रूप से कार्यान्वित किए जाने की बात दोहराई। उन्होंने किसानों को पुरस्कृत भी किया। विशिष्ट अतिथि हेस्को संस्थापक डा. अनिल जोशी की पहल पर संगोष्ठी के अंतिम सत्र में प्रतिभागियों ने मृदा संरक्षण की शपथ भी ली। उन्होंने जल दिवस, वन दिवस की तर्ज पर मृदा दिवस मनाए जाने का भी आह्वान किया इस संगोष्ठी में हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर के साथ ही दिल्ली, चंडीगढ़ आदि स्थानों से विशेषज्ञों, किसानों ने हिस्सा लिया। इस दौरान उत्तराखंड बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय के उप कुलपति डा. मैथ्यू प्रसाद, भारतीय कृषि एवं अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के सहायक महानिदेशक डा. एसके चौधरी, केंद्रीय मृदा एवं जल संरक्षण, अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान के निदेशक पीके मिश्र, कार्यक्रम संयोजक डा. मुरुगानंदम आदि उपस्थित रहे।

मृदा एवं जल संरक्षण आधारित प्रथम कृषक संगोष्ठी का समापन

यह सुझाव आए सामने

- किसान नेटवर्क, किसान संघों की स्थापना
- गांवों में कृषि विद्यालय खोले जाएं
- आधुनिक उपकरण, तकनीक अपनाएं
- स्थानीय ज्ञान को उन्नत बनाया जाए
- जल के बहुउद्देशीय प्रयोगों को बढ़ावा

देहरादून व शिमला से एकसाथ प्रकाशित
वर्ष 66, अंक 307 आर.एन.आई. 2029/57
।।संस्थापक।। श्री एस.पी. पाँधी
देहरादून, मंगलवार 25 मार्च 2014
पृष्ठ ८, मूल्य १.०० रु

हिमाचल टाइम्स

▲ पेज-8 लोग मेरे अभिनय को लेकर सोच बदलेंगे : सनी

रूपया-डॉलर $1- 60.77-
सैन्सेक्स 22055+
निफ्टी 6584+
सोना (प्रति 10 ग्राम) 29,274
चांदी (प्रति किलो) 44,040

मृदा एवं जल संसाधन संरक्षण हेतु कृषक प्रथम संगोष्ठी का समापन

हिमाचल टाइम्स
संवाददाता, देहरादून।

भारतीय मृदा एवं जल संरक्षक संघ एवं केन्द्रीय मृदा एवं जल संरक्षण अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान, देहरादून के संयुक्त तत्वावधान में 22–24 मार्च 2014 तक आयोजित मृदा एवं जल संसाधन संरक्षण हेतु कृषक प्रथम संगोष्ठी का समापन हुआ।

समापन समारोह के मुख्य अतिथि डा0 आर0 एस0 तोलिया, पूर्व मुख्य सचिव उत्तराखंण्ड सरकार एवं मुख्य सूचना आयुक्त उत्तराखंड थे । इन्होने सह–भागियों को संबोधित किया, प्रगतिशील किसानों को पुरस्कार वितरित किए तथा विभिन्न सरकारी संस्थाओं से विभिन्न योजनाओं के माध्यम से किसानों को लाभ पहुंचाने वाली योजनाओं के एक संगठित एवं सकिय रूप से कार्यान्वयन की आवश्यकता पर बल दिया । डा0 मैथ्यू प्रसाद, उप–कुलपति, उत्तराखंड बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, डा0 एस0 के0 चौधरी, सहायक महानिदेशक, भा0 कृ0 अनु0प0, नई दिल्ली तथा डा0 अनिल प्रकाश जोशी, अध्यक्ष, हेस्को, देहरादून संगोष्ठी के विशिष्ट अतिथि थे, जिन्होने सहभागियों को संबोधित किया।

डा0 मैथ्यू प्रसाद, उप–कुलपति तथा डा0 एस0के0 चौंगरी, सहा0 महानिदेशक ने मृदा जैविक कार्बन की हानि तथा मृदा स्वास्थ्य जो जीवन के आवश्यक तत्व हैं की गिरावट पर चिंता व्यक्त करने के लिए इसको नियंत्रण करने पर जोर किया, इससे पूर्व डा0 पी0 के0 मिश्रा, निदेशक, के0 मृ0 ज0 सं0 अनु0 प्र0 सं0, देहरादून एवं अध्यक्ष भा0 मृ0ज0 सं0 संघ, देहरादून ने मुख्य अतिथि, प्रगतिशील किसानों एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए संगोष्ठी में चर्चा किए गए विषयों के बारे में बताया ।

संगोष्ठी उत्तर भारत के पांच राज्यों ह्हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश एवं जम्मू और काश्मीर ६ के साथ–साथ एन0सी0आर0 दिल्ली एवं केन्द्र शासित, चंडीगढ से आए किसानों के मुद्दों एवं अनुभवों पर केन्द्रित थी । चुने हुए प्रगतिशील किसानों ने अपने विचारों एवं अनुभवों को वैज्ञानिकों एवं कार्यकर्त्ताओं के साथ सांझा किया । संगोष्ठी के माध्यम में किसान अनुसंधानकर्त्ता, नीतिनिर्धारक, नियोजक, प्रशासक, गैर सरकारी संगठरन एवं कार्यकर्त्ता एक मंच पर एकत्रित हो सके । जहां बैठकर उन्होने मृदा एवं जल संरक्षण से जुडी पद्धतियों के उन्नतिकरण, अन्य मुद्दों व अनुभवों पर चर्चा की ।

कुल मिलाकर लगभग 180 पंजीकृत सहभागियों ने संगोष्ठी में भाग लिया जिसमें 60 किसान साधन सम्पन्न विशेषज्ञ, शोध प्रबंधक एवं नीति नियोजक थें जिन्होने 22–24 मार्च, तीन दिनों तक चलने वाले विचार विमर्श में भाग लिया । संगोष्ठी में लिए गए निष्कर्षों में कृवि0 के एवं राज्य कृषि विश्वविद्यालयों सहित भा0 कृ0 अनु0 प0 के अन्य संस्थानों तथा केन्द्रीय व राज्य संस्थाओं के साथ–साथ गैर सरकारी संगठनों की सकिय भूमिका रही ।

विचार विमर्श के दौरान शोध । योग्य विषयों, नीतिगत आवश्यकताओं एवं विस्तार प्रयासों से संबंधित कई संस्तुतियां उभर कर सामने आई । जिन्हें आयोजकों द्वारा आगे भी अतिम प्रयोगकर्त्ताओं हेतु बनाया जाएगा ।

किसानों के नेटवर्क, एवं किसानों के संघों की प्रस्तुतियों आधुनिक गांवों में प्रक्षेत्र विद्यालयों, आधुनिक उपकरणों एवं तकनीकी को अपनाने, स्थानीय ज्ञान को उन्नत बनाने, जल के बहुउद्देशीय प्रयोगों को आज की आवश्यकताओं के रूप में चिन्हित किया गया ।

155 नामांकनों में से 44 प्रगतिशील किसानों को मृदा एवं जल संरक्षण के क्षेत्र में अपने विचार एवं अनुभव बांटने के लिए आमंत्रित किया गया ।

दि0 24 मार्च 2014 के अंतिम सत्र में "मृदा बचाओ" अभियान के अंतर्गत शपथ भी ग्रहण की गई ।

संगोष्ठी को, राष्ट्रीय बारानी क्षेत्र प्राधिकरण, नई दिल्ली, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, राष्ट्रीय मत्यस्यिकी विकास बोर्ड हैदराबाद, राष्ट्रीय जैवकि विविधता प्राधिकरण, चैन्नई, नबार्ड, मुम्बई, विज्ञान एवं अभियांत्रिकी अनुसंधान बोर्ड नई दिल्ली, भूमि संसाधन विभाग, ग्रामीण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित किया गया ।

संगोष्ठी का उद्घाटन 22 मार्च को मुख्य अतिथि, डा0 जे0एस0 सामरा, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, राष्ट्रीय बारानी क्षेत्र प्राधिकरण द्वारा किया गया । संगोष्ठी के विभिन्न सभा में बहुत से वैज्ञानिकों एवं प्रगतिशील किसानों को उनकी उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए बहुत से पुरस्कार वितरित किये गए । डा0 एम0 मुरूगानंदम्, संगोष्ठी के आयोजक सचिव ने संगोष्ठी के दौरान प्रकाश में आई जानकारियों को आगे बढाने के लिए प्रतिभागियों एवं किसानों से निरंतर विचार–विमर्श किया ।

अंत में किसानों इस प्रकार की संगोष्ठी पहली बार आयोजित किए जाने के लिए संस्थान को धन्यवाद दिया एंव अत्यंत प्रसन्नता व्यक्त की । सबसे अंत में डा0 डी0 मण्डल, सचिव भारतीय मृदा एवं जल संरक्षक संघ, देहरादून ने सबका धन्यवाद ज्ञापित किया ।